

रक्तदान – महादान

प्रस्तावना भारत को दानवीरों की भूमि कहा जाता है। यहाँ पर दानवीर कर्ण, दधीचि जैसे कई दानी पुरूष हुये हैं जिन्होंने अपनी अनमोल वस्तुओं का दान कर अपने मानव जीवन को सफल बनाया है। मनुष्य योनि ईश्वर का वरदान है और इसे सफल बनाने के लिए मनुष्य को कुछ विशेष करना होगा। जिससे वह दूसरे मनुष्यों का हित कर सके। आज के परिपेक्ष्य में दान तो अनेक हैं, उदाहरण स्वरूप धनदान। धन को दान करके मनुष्य केवल व्यक्ति की आर्थिक सहायता करता है, परंतु रक्तदान के द्वारा मनुष्य, मनुष्यों का जीवन बचा सकता है। शायद इसीलिए कहा गया है “रक्तदान-महादान है”

रक्त की संरचना रक्त मनुष्य के शरीर में बहने वाला क्षारीय प्रेंति का, लाल रंग का तरल है। जिसके अवयवी घटक रक्त प्लाज्मा, लाल रूधिर कणिकाएँ, श्वेत रूधिर कणिकाएँ व रक्त प्लेटलेट्स आदि हैं। एक स्वस्थ व्यस्क मानव के शरीर में 5 लीटर के लगभग रक्त उपस्थित रहता है। रक्त समूह-चूँकि मनुष्य के शरीर में एक ही रंग का रूधिर बहता है। परंतु सर्वप्रथम लैण्ड स्टेनर ने खोजा कि मनुष्य के शरीर में अलग-अलग रक्त समूह पाये जाते हैं जो हैं ए, बी, एबी और ओ रक्त समूह।

रक्त का महत्त्व - कहा जाता है कि मनुष्य के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन अत्यंत आवश्यक है, परंतु ऑक्सीजन से पहले रक्त आवश्यक है। कारण है कि रक्त ही एक ऐसा पदार्थ है जो प्राणवायु को हमारे संपूर्ण शरीर में संचारित करता है।

रक्तदान-महादान सबसे प्रथम प्रश्न उठता है कि रक्तदान क्या है ? अपने रक्त को ऐसे व्यक्ति को देना, जिसके लिये इसकी आवश्यकता हो, रक्तदान कहलाता है। रक्तदान को महादान कहते हैं क्योंकि यदि हम अपने थोड़े से सहयोग द्वारा अर्थात् शरीर के थोड़े से रक्त का दान करके ईश्वरीय देन को अर्थात् मनुष्य जीवन को बचा सके तो यही सबसे बड़ा दान होगा। इससे श्रेष्ठ कोई दान नहीं होगा। तुलसीदास जी ने कहा भी है।

परहित सरस धरम नहीं भाई

अर्थात् परहित से बड़ा कोई धर्म नहीं है। अतः यह उक्ति भी सत्य है - रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है।

रक्तदान में समाज की भूमिका

आज प्रत्येक मनुष्य अपने रक्त के महत्त्व को जान चुका है, परंतु कभी-कभी हमारी कुछ गलतियों के कारण इस अनमोल वस्तु को व्यर्थ गँवा देते हैं और हमारा जीवन संकट में आ जाता है। परंतु आज समाज जागरूक हो चुका है व रक्तदान के महत्त्व को भी समझ चुका है। आज मनुष्य किसी भी व्यक्ति को चाहे वह उसका मित्र हो, रिश्तेदार हो, धर्म का हो या राष्ट्र का हो, रक्तदान के लिए तैयार है। वर्तमान में कई “रक्त सेवा समितियों” व रक्तदान शिविरों का आयोजन राष्ट्र के प्रत्येक गाँव-शहर में हो रहा है। कई व्यक्ति तो कई बार रक्तदान कर अपने जीवन को सफल बना चुके हैं। स्पष्ट है कि व्यक्ति रक्तदान के महत्त्व को समझ चुका है।

रक्तदान के प्रकार

रक्तदान व्यक्ति दो प्रकार से कर सकता है - सीधे ही रक्तग्राही को रक्त देकर और रक्त बैंकों में जमा करके। वर्तमान में रक्त बैंकों में रक्त के विभिन्न घटकों को अलग कर उनका भी उपयोग किया जाने लगा है क्योंकि रक्त केवल 30 दिन तक सुरक्षित रहता है, परंतु उसके अवयवी घटकों को अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, अतः कह सकते हैं कि यह रक्तदान से संबंधित महत्त्वपूर्ण कदम है।

रक्तदान कौन कर सकता है - ऐसा व्यक्ति जो 18 वर्ष की अवस्था पूर्ण कर चुका हो तथा सकारात्मक सोच रखता हो, रक्तदान का पुण्य प्राप्त कर सकता है। इसके लिए मनुष्य को स्वस्थ होना आवश्यक है और उसे रक्तदान प्रक्रिय की पूर्ण जानकारी होना भी आवश्यक है।

रक्तदान के संबंध में भ्रांतियाँ एवं निराकरण

कई लोग आज भी रक्तदान जैसे महादान से दूर हैं, क्योंकि ऐसे लोगों की भ्रांति है कि रक्तदान में उनके रक्त की अधिक मात्रा ले ली जायेगी उनमें रक्तदान करने से रक्त की कमी हो जायेगी, परंतु यह केवल उनकी भ्रांति है। हमारे शरीर में 5 लीटर के लगभग रक्त रहता है और उसकी केवल 300-400 मिली. मात्रा का दान किया जाता है। दाता व्यक्ति के शरीर में 48 घंटे में ही रक्तप्लाज्मा की आपूर्ति हो जाती है तथा 3 महीने के अंदर ही लाल-रक्त कणिकाओं की आपूर्ति हो जाती है अतः रक्तदान करने वाला व्यक्ति पुनः रक्तदान करने के लिए शारीरिक रूप से सक्षम हो जाता है। अतः रक्तदान संबंधी भ्रांतियाँ निरर्थक है।

उपसंहार रक्तदान का महत्त्व भलीभांति मनुष्य के सामने स्पष्ट हो चुका है अतः यदि अब भी मनुष्य ईश्वरीय देन का सही दिशा में उपयोग न करे, तो उसका जीवन निरर्थक होगा।

ईश्वर के द्वारा रचित पेड़-पौधे मनुष्य को निःस्वार्थ भाव से फल देते हैं, नदी निःस्वार्थ ही पानी देती है, तो फिर मनुष्य इस ईश्वरीय देन के महत्त्व को समझकर उसका सही दिशा में उपयोग क्यों नहीं करता ?

अतः मनुष्य को रक्तदान संबंधी सभी भ्रांतियों को दूर करना होगा। अतः सार यही है कि यदि मनुष्य एक बार भी रक्तदान करता है, तो वह पुण्य का भागी हो जाता है अतः मनुष्य को अपने जीवन में कम से कम एक बार और अधिकतम संपूर्ण जीवनभर रक्तदान का लाभ लेना चाहिए। यही मनुष्य का कर्तव्य भी है।